

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 1ए, वाल्लो के धर्मांतरण की जड़ें (1172-1207 ई.)

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

सुप्रभात। मेरा नाम केविन फ्रेडरिक है। मैं वाल्डेन्सियन प्रेस्बिटेरियन चर्च का पादरी हूँ। मैंने अब तक लगभग दस वर्षों तक इस मण्डली की सेवा की है, और इस मण्डली के साथ अपनी भूमिका के हिस्से के रूप में, जब मैं यहाँ आया, तो मुझे एहसास हुआ कि वाल्डेन्सियन लोगों के इतिहास को विकसित करने की वास्तव में आवश्यकता थी क्योंकि इस मण्डली की पृष्ठभूमि में महान, समृद्ध विरासत है।

इस चर्च के 50% से ज़्यादा सदस्य वाल्डेन्सियन वंश के हैं। इस दृष्टिकोण से, मैंने वाल्डेन्सियन इतिहास पर कई उपदेश विकसित किए हैं, और हम वाल्डेन्सियन आंदोलन के संस्थापक पीटर वाल्डो से शुरुआत करने जा रहे हैं। हम वास्तव में उन्हें वाल्डो कहते हैं। फ्रेंच में उनका नाम वाल्डेज़ था, और वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इस आंदोलन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

लेकिन मैं सबसे पहले लूका 18 से शास्त्रों को पढ़ना शुरू करना चाहूँगा। यह वाल्डो द्वारा उद्धृत तीन महत्वपूर्ण मूल शास्त्रों में से एक है। लूका 18 से, एक शासक ने उससे पूछा, अच्छे गुरु, मुझे अनंत जीवन पाने के लिए क्या करना चाहिए? यीशु ने उससे कहा, तू मुझे अच्छा क्यों कहता है? कोई भी अच्छा नहीं है, केवल परमेश्वर ही अच्छा है।

तुम आज्ञाओं को जानते हो: तुम व्यभिचार नहीं करोगे, तुम हत्या नहीं करोगे, तुम चोरी नहीं करोगे, तुम झूठी गवाही नहीं दोगे और अपने पिता और अपनी माँ का आदर करोगे। उसने उत्तर दिया कि मैंने अपनी युवावस्था से ही इन सबका पालन किया है। जब यीशु ने यह सुना, तो उसने उससे कहा, अभी भी एक बात की कमी है: अपनी सारी संपत्ति बेच दो और गरीबों को बाँट दो, और तुम्हें स्वर्ग में खजाना मिलेगा।

फिर मेरे पीछे आ। परन्तु जब उसने यह सुना, तो वह उदास हो गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। यीशु ने उसकी ओर देखकर कहा, धनवानों के लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है।

सचमुच, ऊँट का सूई के छेद में से निकल जाना, धनवान का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से कहीं अधिक सहज है। यह प्रभु का वचन है। परमेश्वर का धन्यवाद हो।

अच्छे गुरु, अनंत जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? सदियों से ईसाई लोग खुद से यह सवाल पूछते रहे हैं, जब वे परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते पर विचार करते हैं। और अक्सर, जिस तरह से उन्होंने अपना जीवन जीने का चुनाव किया, वह उस उत्तर से काफी अलग था जो यीशु ने उस दिन अमीर युवक को दिया था। अमीर युवक टोरा की आज्ञाओं को पूरा करने के लिए

बाइबिल के निर्देशों को लागू करने से संतुष्ट नहीं था और अपने जीवन में अर्थ की अधिक गहराई की तलाश कर रहा था।

जवाब में, यीशु ने अमीर युवक को चुनौती दी कि अपनी संपत्ति बेचकर गरीबों को दे दो, और तुम्हें स्वर्ग में खजाना मिलेगा। फिर आओ और मेरे पीछे चलो। इस युग में या किसी भी युग में बहुत कम लोगों ने कभी इस निर्देश का अक्षरशः पालन किया है।

यह इतना संपूर्ण और मांग वाला है कि इसके लिए पूर्ण आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। यह एक कहानी है जो 12वीं शताब्दी के वाल्डो नामक एक व्यक्ति द्वारा शुरू किए गए आंदोलन की उत्पत्ति का वर्णन करती है, जिसने बाइबिल के आदेश का सामना करने पर, यीशु मसीह के निर्देश के अनुसार जीने का प्रयास किया। 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांस के ल्योन के व्यापारिक व्यापार में अपना भाग्य बनाने वाले एक धनी व्यापारी, वाल्डो, फ्रेंच में वाल्डेज़, कैथोलिक चर्च के प्रति समर्पित एक धार्मिक व्यक्ति भी थे।

एक संपन्न नागरिक, एक व्यापारिक नेता और एक धर्मनिष्ठ ईसाई के रूप में, वाल्डो रोमन चर्च के नेता के साथ अच्छे संबंध रखता था। कुछ अभिलेखों से संकेत मिलता है कि उसने ल्योन के चर्च में एक आम नेतृत्व की भूमिका निभाई होगी। ल्योन का बढ़ता शहर 12वीं सदी के फ्रांस में एक सांस्कृतिक और समृद्ध व्यापारिक समुदाय था।

यह रोमन चर्च का एक क्षेत्रीय केंद्र भी था, जिसका अपना बिशप था। वाल्डो के धर्म परिवर्तन से पहले के वर्षों में, जब वह गरीबी में जीवन जीने लगा था, वाल्डो ने चर्च के दो नेताओं को, जो लैटिन भाषा में पारंगत थे, क्षेत्र की आम भाषा में उसके लिए बाइबिल के कुछ हिस्सों का अनुवाद करने का काम सौंपा था, ताकि वह खुद शास्त्रों को पढ़ और अध्ययन कर सके। 12वीं शताब्दी में ऐसा अनुरोध असामान्य था, और इसकी सापेक्ष अस्पष्टता के कारण, इसने कैथोलिक पदानुक्रम का ध्यान आकर्षित नहीं किया।

इसलिए, वाल्डो द्वारा बाइबिल के कुछ हिस्सों का स्थानीय भाषा में अनुवाद करने का अनुरोध चर्च के पदानुक्रम के रडार से दूर रहा और इसे अवैध नहीं माना गया। वाल्डो ने इन अनुवादित शास्त्रों का अध्ययन किया और धार्मिक नेताओं के साथ उन पर चर्चा की। फिर उन्होंने उनके अर्थ की शाब्दिक व्याख्या की क्योंकि वे उनके अपने जीवन पर लागू होते थे।

हमारे लिए यह अनुमान लगाना गलत होगा कि 12वीं सदी में वाल्डो के लिए अपनी संपत्ति बेचना, सारी संपत्ति और गरीबों को दे देना और गरीबी का जीवन अपनाना हमारी सदी के किसी व्यक्ति के लिए जितना आसान होगा, उससे कहीं ज़्यादा आसान रहा होगा। 12वीं सदी में, भिक्षा देने के अलावा कोई सामाजिक सुरक्षा जाल जैसी कोई चीज़ नहीं थी, जबकि आज, गरीबों के लिए सरकारी और गैर-लाभकारी सेवाओं का एक संयोजन प्रदान किया जाता है। यह माना जाना चाहिए कि वाल्डो ने जो निर्णय लिया, वह किसी भी उम्र में रहने वाले व्यक्ति के लिए विश्वास की एक बड़ी छलांग थी।

वाल्डो के जीवन और धर्म परिवर्तन के बारे में संक्षिप्त ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध हैं। हालाँकि, कुछ तथ्य सामने आते हैं जो ऐतिहासिक संदर्भ बिंदु प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक अभिलेख बताते

हैं कि वर्ष 1172 में, एक भयंकर सूखा पड़ा था जिसने फ्रांस और जर्मनी दोनों को प्रभावित किया था।

मौसम की स्थिति ने एक विनाशकारी अकाल पैदा कर दिया, जो विशेष रूप से क्षेत्र के गरीबों के लिए कठिन था। वाल्डो ने व्यापारिक व्यापार में अपना भाग्य बनाया था और वह काफी अमीर आदमी था। वाल्डो, वाल्डो, 27 मई से 1 अगस्त 1072 के बीच, सप्ताह में तीन दिन नियमित रूप से रोटी, सूप और मांस मांगते थे।

उस वर्ष 15 अगस्त को, असम्पशन के पर्व पर, उसने सड़कों पर गरीबों को पैसे बांटे, और कहा कि कोई भी व्यक्ति मैथ्यू 6 से भगवान और धन की सेवा नहीं कर सकता। इस धनी व्यापारी के अजीब व्यवहार को देखने वाले राहगीरों और दोस्तों ने उसकी समझदारी पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। फिर भी, उसने कथित तौर पर अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए अपने कार्यों को उचित ठहराया, जिन्होंने उसे पैसे और चीजों को बनाने के लिए गुलाम बना दिया था, और उसने यह भी कहा कि उसने अपने श्रोताओं को धन के बजाय भगवान पर भरोसा करना सिखाने के लिए ऐसा किया था। धीरे-धीरे, उसके दोस्तों और व्यापारिक संपर्कों, जिसमें उसकी अपनी पत्नी भी शामिल थी, को लगा कि वह पूरी तरह से पागल हो गया है।

उसकी पत्नी, जो अपनी समृद्ध जीवनशैली और जीवन जीने के तरीके को बहुत महत्व देती थी, ने उसे अपना मन बदलने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की और अपने सबसे करीबी दोस्तों से उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन वाल्डो ने अपना मन बना लिया। इसने वाल्डो और उसके परिवार के बीच एक बड़ी दरार पैदा कर दी, खासकर तब जब वाल्डो ने अपनी पत्नी और दो बेटियों के लिए अपनी संपत्ति और संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा आवंटित करने के लिए कानूनी व्यवस्था करना शुरू कर दिया। दान देने और मसीह का अनुसरण करने के लिए शास्त्र के आदेश का पालन करने के लिए, वाल्डो ने खुद को अपने परिवार से दूर कर लिया, प्रभावी रूप से खुद को तलाक दे दिया।

वे उसके जीवन में आए इस अचानक परिवर्तन को समझ नहीं पाए, और फिर भी वह उनके लिए बहुत परवाह करता था। शिष्य बनने का उसका आह्वान अब उसका प्राथमिक ध्यान बन गया। एक ऐसे समाज में जो काफी हद तक निरक्षर था, मौखिक परंपरा ने अपने इतिहास के संरक्षण और शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बारहवीं सदी में यूरोप में 90 प्रतिशत से ज़्यादा लोग निरक्षर थे। केवल अमीर और शासक वर्ग ही शिक्षा की विलासिता को वहन कर सकता था। ऐसी सांस्कृतिक सेटिंग में, कहानी सुनाना, कविता और लंबी गाथाएँ समाज के भीतर ज्ञान और जानकारी को आगे बढ़ाने का प्राथमिक साधन बन गईं।

वाल्डो और उनके अनुयायियों ने लोगों की भाषा में धर्मग्रंथों के शब्दों की घोषणा और शिक्षा देकर मौखिक संचार के महत्व पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। यह रोमन कैथोलिक चर्च में एक क्रांतिकारी परिवर्तन था, जिसका मानना था कि धर्मग्रंथों की भाषा लैटिन तक सीमित होनी चाहिए, जो कि आबादी के एक प्रतिशत से भी कम लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा है। लोगों

की भाषा में भगवान के वचन की वाल्डो की घोषणा शुरू में बेहद लोकप्रिय और अच्छी तरह से प्राप्त हुई थी।

वाल्डो के मंत्रालय की प्रभावशीलता को रोमन कैथोलिक पदानुक्रम द्वारा एक खतरा माना जाता था, जिन्होंने वाल्डो के अनुयायियों और उनके द्वारा धर्मग्रंथों की सार्वजनिक घोषणा की निंदा की थी। उन्हें और उनके अनुयायियों, जिन्हें ल्योन के गरीब कहा जाता था, को 1184 में बहिष्कृत कर दिया गया था। बाद में, 1215 में, उन्हें विधर्मी के रूप में निंदा की गई।

ल्योन के गरीबों का उत्पीड़न चर्च द्वारा तेजी से संगठित किया गया, और चौदहवीं शताब्दी तक, रोमन कैथोलिकों द्वारा विधर्म और उसके सभी अनुयायियों को नष्ट करने के लिए धर्मयुद्ध शुरू किया गया। कई सौ वर्षों की इस अवधि में, वाल्डो के धर्मांतरण के इर्द-गिर्द तीन अलग-अलग मिथक वाल्डेन्सियन समुदायों के भीतर उभरे, जिन्होंने 1172 में फ्रांस और जर्मनी को प्रभावित करने वाले अकाल से जुड़े तथ्यात्मक आंकड़ों को दबा दिया। समय बीतने के साथ-साथ तथ्यों को काफी हद तक भुला दिया गया था, और फिर भी पश्चिमी यूरोप में वाल्डेन्सियन समुदायों में उभरे मिथकों ने 1172 में ल्योन शहर के गरीबों के लिए अकाल से पैदा हुई पीड़ा के प्रति वाल्डो की प्रतिक्रिया की यादों की व्याख्या की और उन्हें संरक्षित किया।

इतिहासकार और वाल्डेन्सियन जियोजियो ट्यूरिन, 1980 में लिखी गई *पुस्तक द वाल्डेन्सियन्स, द फर्स्ट एट हंड्रेड इयर्स के लेखक*, स्वयं एक वाल्डेन्सियन पादरी और इतिहासकार थे।